Zaban Ki Hifazat Ki Ahmiyyat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 465
Weekly Booklet : 465

अमीरे अहले सुन्नत की किताब "गुफ़्तगू के आदाब" से पाँचवीं क़िस्त

ज़बान की हिफ़ाज़त की अहमिय्यत

सफ़हात : 16

सख़्त गर्मी का रोज़ा बरदाश्त मगर..... 03
रोज़ी में तंगी का एक सबब 04
जहालत की 6 निशानियां 11
पांच बेहतरीन नसीहतें 14

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

ज़बान की हिफ़ाज़त की अहमिय्यत(1)

दुआए अत्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 16 सफ़्हात का रिसाला "ज़बान की हिफ़ाज़त की अहमिय्यत" पढ़ या सुन ले उसे ज़बान से होने वाले और दीगर तमाम गुनाहों से बचा, अपना पसन्दीदा बन्दा बना और उस को मां बाप समेत बे हिसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जिस ने शौक़ व महब्बत की वजह से दिन और रात में मुझ पर तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक पर हक़ है कि वोह उस के उस दिन और रात के गुनाह बख़्श दे। (معجم کبیر، 18/362، حدیث:928)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अल्लाह पाक से ज़बान की तेज़ी की शिकायत

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने देखा कि मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपनी ज़बान मुबारक को हाथ से पकड़ कर खींच रहे हैं, पूछा कि ऐ नाइबे रसूल ! आप येह क्या कर रहे हैं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि येह मुझे हलाकत (यानी तबाही) की जगहों पर ले गई है और हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस्म में कोई ऐसा उ़ज़्व नहीं कि अल्लाह पाक से ज़बान की तेज़ी की शिकायत न करता हो।" (इह़याउल उ़लूम (उर्दू), 3/335, احیاء العلوم، 3/135)

1... येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की किताब "गुफ़्तगू के आदाब" सफ़्हा 67 ता 80 से लिया गया है।

हमें ज़बान से बाहर मत निकाल

देखा आप ने ! मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ जैसे बख़्शे बख़्शाए सहाबी ज़बान की आफ़तों से बहुत डरते थे, यक़ीनन इस में हम लोगों के लिए काफ़ी नसीह़त है, क्यूंकि हम तो जी में जो आया वोह ज़बान से बोल पड़ते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ लिखते हैं : बहुत सी बातें ऐसी होती हैं जो बोलने वाले शख़्स से कहती हैं : "हमें ज़बान से बाहर न निकाल।"

(मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 145, منہاج العابدین، ص66)

ज़बान को क़ैद ही में रहना चाहिए

अ़रबी मक़ूला (यानी कहावत) है : مَاشَیْءٌ اَحَقُّ بِطُوْلِ السِّجْنِ مِنَ اللِّسَانِ कोई भी शै ज़बान से बढ़ कर क़ैद में रहने की ह़क़दार नहीं।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 210, منہاج العابدین، ص96)

ज़बान की हिफ़ाज़त से इ़बादत पर इस्तिक़ामत मिलती है

सात आ़बिदों (यानी इ़बादत गुज़ारों) में से एक आ़बिद (यानी इ़बादत गुज़ार) ने (अल्लाह पाक के प्यारे नबी) ह़ज़रते यूनुस (عَلَیْہِ السَّلَام) की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : जो लोग पूरी कोशिश से इ़बादत में मश्ग़ूल रहते हैं उन को इ़बादत पर जो इस्तिक़ामत (यानी ठहराव) नसीब होती है वोह ज़बान की पूरी त़रह़ हिफ़ाज़त करने का नतीजा है। फिर उस आ़बिद (यानी इ़बादत गुज़ार) ने अ़र्ज़ की : आप के नज़्दीक कोई भी चीज़ ज़बान की हिफ़ाज़त से ज़ियादा पसन्दीदा नहीं होनी चाहिए क्यूंकि दिल को हर क़िस्म के वस्वसों से पाक रखने का ज़रीआ़ येही है।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 210, منہاج العابدین، ص96تا97)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

फ़ुज़ूल बात पर ख़ुद को सज़ा (वाक़िआ)

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन ज़ैग़म رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे माजिद ने बताया कि हज़रते क़ैसी رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ हमारे यहां अ़स्र के बाद तशरीफ़ लाए और मेरे वालिद साहिब के बारे में पूछा : हम ने कहा : "वोह सो रहे हैं ।" आप رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : "क्या वोह अ़स्र के बाद सो रहे हैं ? इस वक़्त ? क्या येह वक़्त सोने का है ?" फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ तशरीफ़ ले गए। हम ने एक शख़्स को उन के पीछे भेजा कि उन से कहे कि आप चलिए ! मैं उन को आप के लिए जगा दूंगा। वोह शख़्स मग़रिब के बाद वापस आया तो हम ने उस से पूछा : क्या तुम ने उन्हें पैग़ाम दे दिया था ? कहा : वोह अपने आप में इतने मसरूफ़ थे कि मेरी बात पर तवज्जोह न दी, मैं ने उन्हें देखा, वोह क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो रहे थे और अपने आप को मलामत करते (यानी डांटते) हुए कह रहे थे : "बन्दा जब चाहे सोए, तू ने येह क्यूं कहा कि येह कौन सा सोने का वक़्त है ! तुझे फ़ुज़ूल सुवाल नहीं करना चाहिए था, अब मैं अल्लाह पाक से अ़हद करता हूं और इसे कभी नहीं तोडूंगा कि मैं तुझे पूरा एक साल सोने नहीं दूंगा।" जब मैं ने येह बात सुनी तो उन्हें छोड़ कर वापस आ गया।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/269 ता 270)

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! एक त़रफ़ हमारे बुज़ुर्गाने दीन का अ़मल है और अफ़सोस ! दूसरी त़रफ़ हमारी बिगड़ी हुई ह़ालत कि बेजा एतिराज़ात, फ़ुज़ूल तन्क़ीदात और ग़ैर ज़रूरी सुवालात से फ़ुर्सत नहीं पाते। काश ! हमारी ज़बानों पर लगाम लगने की कोई सूरत बन जाए।

सख़्त गर्मी का रोज़ा बरदाश्त मगर.....

हज़रते यूनुस बिन उ़बैद رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ (बतौरे आ़जिज़ी) फ़रमाते हैं : मेरा नफ़्स (इराक़ के शहर) बसरे की शदीद गर्मी में रोज़ा रखने की तक्लीफ़ (तो) बरदाश्त कर

सकता है मगर फ़ुज़ूल बातों में से एक लफ़्ज़ (भी) छोड़ने की ताक़त नहीं रखता।

(मिन्हाजुल आबिदीन (उर्दू), स. 141, منہاج العابدین،ص64)

ज़बान हिफ़ाज़त की ज़ियादा हक़दार है

ऐ आशिक़ाने रसूल ! यक़ीनन शर्मगाह की गुनाहों से हिफ़ाज़त न करना भी सख़्त गुनाह व हराम व जहन्नम में ले जाने वाला काम है और वाक़ेई अच्छा बोलने में अच्छाई और बुरा बोलने में बुराई है। ज़बान महशर में शायद बड़ों बड़ों को फंसा कर रख देगी। इस की हिफ़ाज़त की बहुत ज़रूरत है। ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मोमिन को चाहिए कि अपनी शर्मगाह से ज़ियादा ज़बान की हिफ़ाज़त करे।

(अल्लाह वालों की बातें, 3/331, حلیۃ الاولیاء،3/267، قول نمبر:3909)

रोज़ी में तंगी का एक सबब

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब तुम अपने दिल में सख़्ती, जिस्म में कमज़ोरी और रिज़्क़ में तंगी देखो तो जान लो कि तुम ने ज़रूर कोई फ़ुज़ूल बात मुंह से निकाली है।

(منہاج العابدین،ص65, मिन्हाजुल आबिदीन (उर्दू), स. 142)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अल्लाह पाक तमाम बातें सुनता है

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ निहायत कम गुफ़्तगू करते और अपने दोस्तों को फ़रमाते : "तुम ग़ौर करो कि अपने आमालनामों में क्या लिखवा रहे हो क्यूंकि वोह तुम्हारे रब्बे करीम के सामने पेश होंगे। तो जो शख़्स बुरी गुफ़्तगू करता है उस पर अफ़सोस है, अगर अपने दोस्त को कुछ लिखवाते हुए कभी उस में बुरे अल्फ़ाज़ लिखवाओ तो येह उस के साथ तुम्हारी बे हयाई तसव्वुर होगी फिर अल्लाह पाक के साथ तुम्हारा क्या मुआमला है ?" (تنبیہ المغترین،ص190)

अगर फ़ुज़ूल बातें करने पर रक़म देनी पड़ती तो ?

हज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "तुम्हारे आमाल लिखने वाले फ़रिश्ते अगर रोज़ाना तुम से उन सहीफ़ों (यानी किताबों) की क़ीमत तलब करें जिन में वोह तुम्हारे आमाल लिखते हैं तो (पैसे बचाने की ख़ातिर) तुम अपनी बहुत सी फ़ुज़ूल बातें छोड़ दो लेकिन येह मालूम होने के बा वुजूद कि (तुम्हारी फ़ुज़ूल गुफ़्तगू से भरपूर) उन सहीफ़ों (BOOKS) को तुम्हारे रब्बे पाक की बारगाहे आली में पेश होना है तो तुम अपने आप को (फ़ुज़ूल बातों से) क्यूं नहीं रोकते ?"

(ابنِ عساکر، 56/418)

हर बात फ़रिश्ते लिखते हैं

पुर वक़ार शख़्सिय्यात जब सामने होती हैं या कभी "अरबाबे कुर्सी" यानी हुक्कामे दुनियादार के सामने जाना पड़ जाता है तो ज़बान ख़ूब संभल जाती है मगर येह मालूम होने के बावुजूद कि इ़ज़्ज़त वाले फ़रिश्ते हर बात लिख रहे हैं फिर भी न जाने बे शर्मी और बे हयाई की बातें लोगों को क्यूं कर सूझती हैं ! ज़बान पर गाली वग़ैरा कैसे आ जाती है ! हज़रते इमाम हसन बसरी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि इन्सान पर तअ़ज्जुब है कि किरामन कातिबीन (यानी इ़ज़्ज़त वाले, लिखने वाले फ़रिश्ते) इस के पास हैं और इस की ज़बान उन का क़लम और इस का थूक उन की सियाही है, फिर भी वोह बेहूदा कलाम (यानी फ़ुज़ूल और गन्दी बातें) करता है।

(تنبیہ المغترین، ص190)

इलाही बुरी गुफ़्तगू से बचाना
मेरी यावह गोई की आ़दत मिटाना

यावह गोई के माना : फ़ुज़ूल बातें करना।

फ़ुज़ूल गुफ़्तगू के मुतअ़ल्लिक़ एक वाक़िआ़

ह़ज़रते अबू उ़बैदा رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ बयान करते हैं : हम ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सूक़ा رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आप ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसी बात न सुनाऊं जिस ने मुझे फ़ायदा पहुंचाया और हो सकता है वोह तुम्हें भी फ़ायदा पहुंचाए ? एक मरतबा ह़ज़रते अ़ता बिन अबू रबाह़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : ऐ भतीजे ! तुम से पहले गुज़रे हुए लोग फ़ुज़ूल गुफ़्तगू ना पसन्द करते थे, वोह क़ुरआने करीम की तिलावत करने, नेकी का हुक्म देने, बुराई से मना करने और ज़रूरी बातचीत के इ़लावा तमाम क़िस्म की गुफ़्तगू को "फ़ुज़ूल बातों" में शुमार करते थे। क्या तुम उन फ़रामीने इलाही का इन्कार करते हो ? (जैसा कि इरशाद होता है :) ﴿وَ اِنَّ عَلَیۡکُمۡ لَحٰفِظِیۡنَ ﴿۱۰﴾ کِرَامًا کَاتِبِیۡنَ ﴿۱۱﴾﴾ (پ30، الانفطار: 10، 11) तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और बेशक तुम पर ज़रूर कुछ निगहबान मुक़र्रर हैं मुअ़ज़्ज़ज़ लिखने वाले।

(एक और जगह इरशाद होता है :)

عَنِ الۡیَمِیۡنِ وَ عَنِ الشِّمَالِ قَعِیۡدٌ ﴿۱۷﴾ مَا یَلۡفِظُ مِنۡ قَوۡلٍ اِلَّا لَدَیۡہِ رَقِیۡبٌ عَتِیۡدٌ ﴿۱۸﴾

(پ26، قٓ: 17، 18)

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : एक दाईं जानिब और दूसरा बाईं जानिब बैठा हुवा है। वोह ज़बान से कोई बात नहीं निकालता मगर येह कि एक मुह़ाफ़िज़ फ़रिश्ता उस के पास तय्यार बैठा होता है।

क्या तुम में से किसी को शर्म नहीं आएगी कि अगर उस के दिन भर का नामए आमाल उस के सामने खोल दिया जाए तो अक्सर उस में वोह चीज़ें देखे जिस का तअ़ल्लुक़ न दीन से हो न दुनिया से। (अल्लाह वालों की बातें, 3/440)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

सात मदनी फूलों का फ़ारूक़ी गुलदस्ता

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : ﴾1﴿ फ़ुज़ूल बोलने से बचने वाले को ह़िक्मत व दानाई अ़ता की जाती है ﴾2﴿ फ़ुज़ूल निगाही यानी बिला ज़रूरत इधर उधर देखने या ख़्वाह म ख़्वाह मुख़्तलिफ़ चीज़ों या त़रह़ त़रह़ के मनाज़िर देखने से बचने वाले को ख़ुशूए क़ल्ब (यानी रिक़्क़तो सोज़) दिया जाता है ﴾3﴿ फ़ुज़ूल त़आम (यानी बे ज़रूरत खाना या सिर्फ़ लज़्ज़त के लिए त़रह़ त़रह़ की चीज़ें खाना) छोड़ने वाले को इ़बादत में लज़्ज़त दी जाती है ﴾4﴿ फ़ुज़ूल हंसने से बचने वाले को रोब व दबदबा इ़नायत होता है ﴾5﴿ मज़ाक़ मस्ख़री से बचने वाले को नूरे ईमान नसीब होता है ﴾6﴿ दुनिया की मह़ब्बत से बचने वाले को आख़िरत की मह़ब्बत दी जाती है ﴾7﴿ दूसरों के ऐ़ब ढूंडने से बचने वाले को अपने ऐ़बों की इस्लाह़ की तौफ़ीक़ मिलती है। (المنبّھات، ص89تا90ماخوذاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

फ़ुज़ूल बातों का ह़िसाब लम्बा होगा

बयान किया गया है : اِیَّاكَ وَالْفُضُوْلَ فَاِنَّ حِسَابَهٗ یَطُوْلُ यानी फ़ुज़ूल गुफ़्तगू से बच ! क्यूंकि इस का ह़िसाब लम्बा होगा।

(منہاج العابدین، ص67, मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 147)

न बोल न मुसीबत में पड़

एक और बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

اِحْفَظْ لِسَانَكَ لَاتَقُوْلُ فَتُبْتَلٰی اِنَّ الْبَلَاءَ مُوَكَّلٌ بِالْمَنْطِقِ

तर्जमा : अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त कर, न बोल न मुसीबत में पड़, बेशक मुसीबतें गुफ़्तगू के साथ जुड़ी हुई होती हैं। (منہاج العابدین، ص66)

बोलने वाले की अ़क़्ल का अन्दाज़ा हो जाता है

हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

﴾1﴿ اَلَا احْفَظْ لِسَانَكَ اِنَّ اللِّسَانَ سَرِيْعٌ اِلَى الْمَرْءِ فِيْ قَتْلِهٖ

﴾2﴿ وَ اِنَّ اللِّسَانَ دَلِيْلُ الْفُؤَادِ يَدُلُّ الرِّجَالَ عَلٰى عَقْلِهٖ

﴾1﴿ अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त कर क्यूंकि येह मामूली सा उ़ज़्व (PART) बहुत जल्द इन्सान को हलाकत में डाल देता है।

﴾2﴿ बेशक ज़बान इन्सान के दिल पर दलील है जो गुफ़्तगू करने वालों की अ़क़्ल का अन्दाज़ा बताती है।

(منہاج العابدین ص66, मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 144)

बाज़ारी गुफ़्तगू करने वाले को नसीहत

शैख़ अफ़्ज़लुद्दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने एक शख़्स को बाज़ारी गुफ़्तगू करते सुना तो इरशाद फ़रमाया : ऐ भाई ! अल्लाह पाक ने बन्दे के कान व ज़बान बनाए ताकि अच्छा सुने और अच्छा बोले, क़ुरआने करीम, ह़दीसे पाक, अज़ान और इमाम से तक्बीरे तह़रीमा और जो तुझे नसीह़त करे उस की नसीह़त सुने, और ज़बान व कान को हंसी मज़ाक़, ग़ीबत, बोहतान, झूट, चुग़ली और बेकार बातें करने सुनने के लिए पैदा नहीं फ़रमाया। ऐ भाई ! अपने कान व ज़बान को बे मक़्सद इस्तिमाल करने से परहेज़ कर, येह सरासर नुक़्सान है और अगर ज़बान की तेज़ी की बिना पर कोई (गुनाह भरी) बात निकल जाए तो फ़ौरन तौबा व इस्तिग़फ़ार करो। (المنن الکبریٰ، ص547)

दावते इस्लामी ने नमाज़ी बना दिया

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! दावते इस्लामी का दीनी माह़ौल इस्लामी भाइयों के साथ साथ इस्लामी बहनों के लिए भी मुफ़ीद है। चुनान्चे एक इस्लामी बहन कई आ़म लड़कियों की त़रह़ ना जाइज़ फ़ैशन किया करतीं और नमाज़ों से भी दूर रहा करती

थीं। फिर उन का अपने मामूं के ज़ेरे इन्तिज़ाम दीनी मद्रसे में पढ़ने के लिए जाना हुवा, जहां एक दिन दावते इस्लामी से वाबस्ता कुछ इस्लामी बहनें हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दावत देने के लिए आईं जिस के नतीजे में येह भी अपनी सहेली के इसरार पर इस्लामी बहनों के इज्तिमाअ़ में शरीक हो गईं। वहां पर सुन्नतों भरा बयान सुना, इज्तिमाई रिक़्क़त अंगेज़ दुआ ने उन पर असर किया और उन्हों ने गुनाहों से तौबा कर ली। दावते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद एक दिन वोह आया कि उन्हों ने "इस्लामी बहनों का 12 दिन का मदनी काम कोर्स" (जिसे अब दीनी काम कोर्स कहते हैं) भी किया। उन्हें दावते इस्लामी की ऐसी बरकतें नसीब हुईं कि फ़र्ज़ नमाज़ें अदा करने के साथ साथ नफ़्ल नमाज़ें भी अदा करने लगीं। उन का जज़्बा है कि अपने गांव में ख़ूब दीनी काम करूंगी और जब तक सांसें बाक़ी हैं आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक "दावते इस्लामी" से वाबस्ता रहेंगी।

पिला कर मए इश्क़ देगा बना येह तुम्हें आशिक़े मुस्तफ़ा मदनी माहौल
ऐ इस्लामी बहनो ! तुम्हारे लिए भी सुनो है बहुत काम का मदनी माहौल

(वसाइले बख़्शिश, स. 684)

ज़बान गोया ह़म्ले के लिए तय्यार शेर

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुतीअ़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं :

﴾1﴿ لِسَانُ الْمَرْءِ لَيْثٌ فِيْ كَمِيْنٍ اِذَا خَلَّى اِلَيْهِ لَهُ اِغَارَةٌ

﴾2﴿ فَصُنْهُ عَنِ الْخَنَا بِلِجَامِ صَمْتٍ يَكُنْ لَكَ مِنْ بَلِيَّاتٍ سِتَارَةٌ

﴾1﴿ ज़बान (तबाह करने में) ह़म्ले के लिए तय्यार छुपे हुए शेर की त़रह़ है जो मौक़ा मिलते ही तबाही मचा देती है ﴾2﴿ इस लिए इसे (यानी ज़बान को) ख़ामोशी की लगाम दे कर फ़ुज़ूलिय्यात से रोक कर रख, इस त़रह़ तू बहुत सी आफ़तों से बच जाएगा। (منہاج العابدین،ص66, मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 145)

फाड़ खाने वाला दरिन्दा

एक क़ुरैशी बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : किसी आलिम साहिब से पूछा गया कि आप ख़ामोश क्यूं रहते हैं ? फ़रमाया : मैं ने अपनी ज़बान को फाड़ खाने वाला दरिन्दा पाया है, मुझे डर है कि अगर मैं इसे खुला छोड़ दूंगा तो येह मुझे काट खाएगा। (एक चुप सौ सुख (ख़ामोशी के फ़ज़ाइल), स. 21)

माल की हिफ़ाज़त आसान है मगर ज़बान....

दौलत को इन्सान तिजोरी में बन्द कर के महफ़ूज़ रख सकता है। ज़ियादा ख़ज़ाना हो तो मुसल्लह़ पहरेदार बिठा कर भी हिफ़ाज़त की जा सकती है लेकिन कमाल तो येह है कि कोई अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करने में कामयाब हो जाए। चुनान्चे ह़ज़रते मुहम्मद बिन वासिअ़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से फ़रमाया : "इन्सान के लिए ज़बान की हिफ़ाज़त माल की हिफ़ाज़त से ज़ियादा मुश्किल है।" (اتحاف السادۃ، 9/144)

अपने माल की हिफ़ाज़त के मुआमले में उ़मूमन हर एक होशियार होता है, हालांकि माल ज़ाएअ़ हो भी गया तो सिर्फ़ दुनिया का नुक़्सान है। मगर सद करोड़ अफ़सोस ! अब ज़बान की हिफ़ाज़त की सोच निहायत कम रह गई है, यक़ीनन ज़बान की हिफ़ाज़त न करने के सबब दुनिया के नुक़्सान के साथ साथ आख़िरत की बरबादी का भी पूरा पूरा इम्कान (POSSIBILITY) है।

बक बक की येह आ़दत न सरे ह़श्र फंसा दे   अल्लाह ज़बां का हो अ़ता क़ुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

आशिक़ों की 6 निशानियां

कहते हैं :

عاشِقاں را شَش نِشاں سَت اے پِسر! آہِ سَرد و رنگ زَرد و چشمِ تر

گر تُرا پُرسَند سِہ دیگر کُدام؟ کم خُورَد، کم گُفتَن و خُفتَن حرام

तर्जमा : “आ़शिक़” की येह छे निशानियां हैं : ﴾1﴿ सर्द आहें ﴾2﴿ चेहरे का रंग पीला होना ﴾3﴿ आंखें अश्कबार ﴾4﴿ कम खाना ﴾5﴿ कम बोलना और ﴾6﴿ कम सोना।

जहालत की 6 निशानियां

बात बात पर ग़ुस्से हो जाना, बक बक करते रहना, फ़ुज़ूल ख़र्ची करना, सब को राज़ की बातें बताते फिरना, हर किसी पर एतिमाद कर बैठना, बुरी सोह़बत से न बचना और अच्छी सोह़बत इख़्तियार न करना, येह सब जहालत की निशानियां हैं। एक अ़क़्लमन्द शख़्स का कहना है कि छे बातें ऐसी हैं जिन से जाहिल पहचाना जाता है : ﴾1﴿ ग़ुस्से के वक़्त। यानी हर ख़िलाफ़े मिज़ाज बात पर ग़ुस्से में आ जाना ख़्वाह वोह किसी इन्सान की त़रफ़ से पेश आए या किसी जानवर की वजह से ﴾2﴿ बेकार गुफ़्तगू। लिहाज़ा अ़क़्लमन्द को चाहिए कि बे फ़ायदा गुफ़्तगू न करे, बल्कि इसे मुफ़ीद (यानी फ़ायदे वाली) बात ही करनी चाहिए, ख़्वाह दुनिया के फ़ायदे की हो या आख़िरत के फ़ायदे की ﴾3﴿ फ़ुज़ूल ख़र्ची करना। यानी येह भी जहालत की निशानी है कि माल ऐसी जगह लगाए जहां पर कोई अज्र या फ़ायदा ह़ासिल न हो ﴾4﴿ हर किसी के पास राज़ की बात कहता फिरे ﴾5﴿ हर किसी पर भरोसा कर बैठे ﴾6﴿ दोस्त व दुश्मन में फ़र्क़ न कर पाए यानी मुनासिब तो येह है कि आदमी अपने दोस्त (यानी नेक लोगों) को पहचान कर उन जैसे आमाल करे और उन के नक़्शे क़दम पर चले और दुश्मन को (यानी बुरे लोगों को) पहचान कर उन से बचने की कोशिश करे और

यक़ीनन इन्सान का पहला दुश्मन तो शैतान है लिहाज़ा किसी बात में भी शैतान का कहना न माने (और हर तरह के गुनाह से बचे)। (تنبیہ الغافلین، ص115 ملخصًا)

फ़ाल्तू बातों के चार लर्ज़ा ख़ेज़ नुक़्सानात

हज़रते इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने उन चार वुजूहात (REASONS) से फ़ुज़ूल बातों की मज़म्मत (यानी बुराई बयान) फ़रमाई है : ﴾1﴿ फ़ुज़ूल बातें किरामन कातिबीन (यानी आमाल लिखने वाले, इज़्ज़त वाले फ़रिश्तों) को लिखनी पड़ती हैं, लिहाज़ा आदमी को चाहिए कि उन से शर्म करे और उन्हें फ़ुज़ूल बातें लिखने की ज़हमत (यानी तक्लीफ़) न दे। अल्लाह पाक पारह 26 सूरए قٓ आयत नम्बर 18 में इरशाद फ़रमाता है :

مَا یَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَیْهِ رَقِیْبٌ عَتِیْدٌ ﴿۱۸﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह ज़बान से कोई बात नहीं निकालता मगर येह कि एक मुहाफ़िज़ फ़रिश्ता उस के पास तय्यार बैठा होता है।

﴾2﴿ येह बात अच्छी नहीं कि फ़ुज़ूल बातों से भरपूर आमालनामा अल्लाह पाक की बारगाह में पेश हो ﴾3﴿ अल्लाह पाक के दरबार में तमाम मख़्लूक़ के सामने बन्दे को हुक्म होगा कि अपना आमालनामा पढ़ कर सुनाओ ! अब क़ियामत की ख़ौफ़नाक सख़्तियां उस के सामने होंगी, इन्सान बरहना (यानी बे लिबास) होगा, सख़्त प्यासा होगा, भूक से कमर टूट रही होगी, जन्नत में जाने से रोक दिया गया होगा और हर क़िस्म की राहत उस पर बन्द कर दी गई होगी, ग़ौर तो कीजिए ! ऐसे तक्लीफ़ देह हालात में फ़ुज़ूल बातों से भरपूर आमालनामा पढ़ कर सुनाना किस क़दर परेशान कुन होगा ! (हिसाब लगाइए अगर रोज़ाना सिर्फ़ 15 मिनट भी फ़ुज़ूल बातें की हैं और अगर हर माह के 30 दिन फ़र्ज़ कर लें तो एक महीने के साढ़े सात घन्टे हुए और एक साल के 90 घन्टे, बिलफ़र्ज़ किसी ने पचास साल तक रोज़ाना औसतन

(यानी AVERAGE) 15 मिनट फ़ुज़ूल गुफ़्तगू की तो 187 दिन 12 घन्टे हुए यानी छे माह से ज़ाइद, तो ग़ौर फ़रमाइए ! क़ियामत का हौलनाक दिन जिस में सूरज सिर्फ़ एक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा यानी सख़्त तरीन गर्मी होगी, ऐसी होशरुबा (यानी होश उड़ा देने वाली) गर्मी में मुसल्सल बिला वक़्फ़ा (CONTINUOUSLY) छे माह तक कौन "आमालनामा" पढ़ कर सुना सकेगा ! येह तो 50 बरस की उ़म्र होने की सूरत में सिर्फ़ यौमिया (यानी DAILY) पन्दरह मिनट की फ़ुज़ूल बोलने का हिसाब है। हमारे तो बसा औक़ात कई कई घन्टे दोस्तों के साथ "फ़ुज़ूल गपशप" में गुज़र जाते हैं, गुनाहों भरी बातें और दीगर बुराइयां इस के इ़लावा)

﴾4﴿ बरोज़े क़ियामत बन्दे को फ़ुज़ूल बातों पर मलामत (यानी डांट डपट) की जाएगी और उस को शरमिन्दा किया जाएगा, बन्दे के पास उस का कोई जवाब न होगा और वोह अल्लाह पाक के सामने शर्मो नदामत से पानी पानी हो जाएगा।

(منہاج العابدین، ص67)

हर लफ़्ज़ का किस त़रह़ हिसाब आह ! मैं दूंगा　　अल्लाह ! ज़बां का हो अ़त़ा क़ुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ख़ामोशी सीखो

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है : ख़ामोशी सीखो फिर ह़िल्म (यानी नर्मी व बरदाश्त) सीखो फिर इ़ल्म सीखो फिर उस पर अ़मल सीखो फिर इ़ल्म (सिखाओ और) फैलाओ। (شعب الایمان، 2/288، قول نمبر:1791)

इ़बादत की शुरूआ़त ख़ामोशी से

ह़ज़रते इमाम सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : "इ़बादत का अव्वल (यानी शुरूआ़त) ख़ामोशी है, फिर इ़ल्म ह़ासिल करना, इस के बाद उसे याद करना, फिर इस पर अ़मल करना और उसे फैलाना।" (तारीख़े बग़दाद, 6/6)

ख़ामोशी इ़बादत की चाबी है

ह़ज़रते इमाम सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُاللہِعَلَیْہ बयान करते हैं, कहते हैं : "ज़ियादा ख़ामोशी इ़बादत की चाबी है।" (الصمت مع موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 7/255، قول نمبر:436)

पांच बेहतरीन नसीह़तें

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम मुजाहिद رَحْمَۃُاللہِعَلَیْہ बयान करते हैं कि (सह़ाबी इब्ने सह़ाबी) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا को मैं ने येह फ़रमाते सुना कि पांच चीज़ें मुझे सुवारी के लिए तय्यार बेहतरीन सियाह (यानी BLACK) घोड़ों से ज़ियादा प्यारी हैं : ﴾1﴿ बे फ़ायदा गुफ़्तगू मत करो क्यूंकि येह फ़ुज़ूल है और मुझे तुम्हारे गुनाह (भरी बातों) में जा पड़ने का ख़ौफ़ है और फ़ायदेमन्द गुफ़्तगू भी बे मौक़ा न करो क्यूंकि कई फ़ायदेमन्द गुफ़्तगू करने वाले भी बे मौक़ा फ़ायदे वाली बातें कर के मशक़्क़त (यानी तक्लीफ़) में पड़ जाते हैं। ﴾2﴿ किसी ह़लीम व बुर्दबार (यानी क़ुव्वते बरदाश्त रखने वाले आदमी से) और (किसी) बे अ़क़्ल व बे वुक़ूफ़ शख़्स से बह़स मत करो क्यूंकि बुर्दबार (क़ुव्वते बरदाश्त रखने वाला नाराज़ हो कर हो सकता है) तुम से दिल में बुग़्ज़ रख ले और बे वुक़ूफ़ तुम को (उल्टी सीधी बातें कर के) तुम्हें अज़िय्यत (यानी तक्लीफ़) पहुंचाएगा। ﴾3﴿ अपने भाई का ज़िक्र उस की पीठ पीछे (भी) उसी त़रह़ करो जिस त़रह़ का ज़िक्र तुम उस की त़रफ़ से अपने लिए पसन्द करते हो और इन बातों में उस को मुआ़फ़ कर दो जिन के बारे में तुम चाहते हो कि वोह तुम्हें मुआ़फ़ कर दे। ﴾4﴿ अपने भाई के साथ ऐसा ही सुलूक करो जैसा कि तुम चाहते हो कि वोह तुम्हारे साथ करे। ﴾5﴿ उस शख़्स की त़रह़ अ़मल करो जिसे यक़ीन हो कि नेकी पर उसे (अच्छा बदला) दिया जाएगा और गुनाह पर उस की पकड़ होगी। (इह़याउल उ़लूम (उर्दू), 3/334)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ख़ामोशी की फ़ज़ीलत पर चार फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿ مَنۡ صَمَتَ نَجَا यानी जो चुप रहा उस ने नजात पाई।

(ترمذی،4/225،حدیث:2509)

शर्हे हदीस : यानी ख़ामोशी नजात का सबब है मगर भलाई की बात करना, अच्छाई का हुक्म देना, बुराई से रोकना और ज़िक्रो अज़्कार और तिलावते क़ुरआन पर हमेशगी करना, ख़ामोश रहने से बेहतर है। (الاستذکار،7/372) हज़रते अल्लामा मुनावी رَحۡمَۃُاللہِعَلَیۡہ की शर्ह के मुताबिक़ हदीसे पाक के येह माना बनते हैं : (مَنۡ صَمَتَ)عَنِ النُّطۡقِ بِالشَّرِّ (نَجَا) यानी "जो ख़ामोश रहा (बुरी बात कहने से) उस ने नजात पाई।" (التیسیر،2/428) ﴾2﴿ اَلصَّمۡتُ سَیِّدُ الۡاَخۡلَاقِ यानी ख़ामोशी अख़्लाक़ की सरदार है। (الفردوس،2/417،حدیث:3850) ﴾3﴿ اَلصَّمۡتُ اَرۡفَعُ الۡعِبَادَۃِ यानी ख़ामोशी आला दर्जे की इबादत है।(الفردوس،2/417،حدیث:3849) शर्हे हदीस : यानी ख़ामोशी इबादात की बेहतरीन अक़्साम (KINDS) में से है, क्यूंकि अक्सर ख़ताएं ज़बान से जारी होती हैं। (سراجِ منیر شرح جامع صغیر،3/279) ﴾4﴿ اَلصَّمۡتُ زَیۡنٌ لِّلۡعَالِمِ،وَسِتۡرٌ لِّلۡجَاهِلِ यानी ख़ामोशी आलिम के लिए ज़ीनत और जाहिल के लिए पर्दा है। (جامع صغیر،ص318،حدیث:5159)

साठ साल की इबादत से बेहतर

सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "ख़ामोशी पर क़ाइम रहना साठ (60) साल की इबादत से बेहतर है।" (شعب الایمان،4/245،حدیث:4953)

शर्हे हदीस : मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحۡمَۃُاللہِعَلَیۡہ इस हदीसे पाक के माना यूं बयान फ़रमाते हैं : यानी अगर कोई शख़्स साठ (60) साल इबादत करे मगर ज़ियादा बातें भी करे, अच्छी बुरी बात में फ़र्क़ न करे इस से येह बेहतर है कि थोड़ी देर ख़ामोश रहे क्यूंकि ख़ामोशी में (आख़िरत की) फ़िक्र भी हुई, इस्लाहे नफ़्स भी, मुआरिफ़ व

हक़ाइक़ में इस्तिग़राक़ (यानी यादे इलाही में डूब जाना) भी, ज़िक्रे ख़फ़ी (यानी दिल के ज़िक्र) के समुन्दर में ग़ोता लगाना भी, मुराक़बा (यानी सब चीज़ों को छोड़ कर अल्लाह पाक के ख़याल में डूब जाना) भी। (مرآت،6/361)

भलाई की बात करो या चुप रहो

काश ! बुख़ारी शरीफ़ की येह ह़दीसे पाक हमारे ज़ेहनो दिमाग़ में अच्छी त़रह जम जाए, जिस में येह भी है : مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا اَوْ لِيَصْمُتْ "जो अल्लाह व क़ियामत पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि भलाई की बात करे या ख़ामोश रहे।" (بخاری،4/105،حدیث:6018)

आक़ा त़वील ख़ामोशी वाले थे

كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ طَوِيْلَ الصَّمْت यानी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم त़वील ख़ामोशी वाले थे। (شرح السنۃ،7/45،حدیث:3589) ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के माना बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ख़ामोशी से मुराद है दुनियवी कलाम (यानी दुनियवी बातों) से ख़ामोशी वरना ह़ुज़ूरे अक़्दस (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ज़बान शरीफ़ अल्लाह पाक के ज़िक्र में तर रहती थी, लोगों से बिला ज़रूरत कलाम (यानी गुफ़्तगू) नहीं फ़रमाते थे। येह ज़िक्र है जाइज़ कलाम (यानी जाइज़ बात चीत) का, ना जाइज़ कलाम तो उ़म्र भर ज़बान शरीफ़ पर आया ही नहीं। झूट, ग़ीबत, चुग़ली वग़ैरा सारी उ़म्र शरीफ़ में एक बार भी ज़बान मुबारक पर न आए। ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) सरापा ह़क़ हैं फिर आप तक बात़िल की रसाई (यानी पहुंच) कैसे हो। (مرآت،8/81)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला

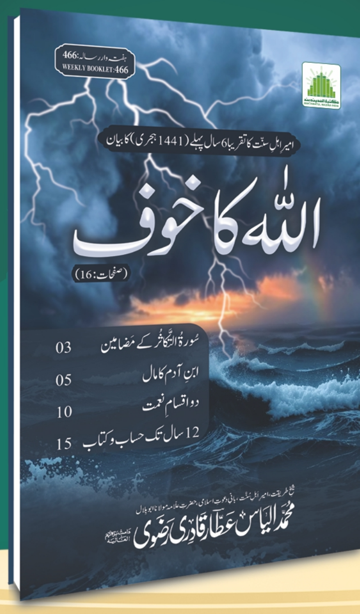

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025